

21/8/24

पत्रावलि का प्रारंभ द्वारा शून्य वाद विज्ञा कर्तव्य
 शरीरान्तरा फे का कर्तव्य पर फेरी में ली गयी। प्रारंभ
 व अज्ञानीगण के मध्य आपसी शरीरान्तरा दौ गवा ई
 शरीरान्तरा के आधार पर पत्रावलि में कोई अनेक
 नदि-शक्ति ई शरीरान्तरा-पत्र शून्य वाद के सतत ई
 पत्रावलि का अवलोकन विषा। प्रारंभ व अज्ञानीगण के
 मध्य शरीरान्तरा दौ गवा ई शरीरान्तरा के आधार
 पर पत्रावलि विज्ञा कर्तव्य की अन्तर्गत उद्देश्य की
 शक्ति ई पत्रावलि की उत्तर पर बन्द की जाती ई
 पत्रावलि निम्न-शुभा श्रेष्ठ शक्ति उत्पन्न ई।

आदेश ब्रह्माणा।।

(1)
 उपलब्ध अधिकारी
 श्री विजयनगर